

# पापड़ के लोए बनाने का एक दुर्लभ प्राचीन यंत्र



चित्र देख कर शायद आप इस यंत्र को कोई संगीत का वाद्य यंत्र समझेंगे ।

बिल्कुल गलत ! यह महिलाओं की सुख सुविधा का ध्यान रखने वाले और स्त्री शिक्षा के प्रवर्तक बीकानेर के एक प्रसिद्ध माहेश्वरी परिवार की धरोहर है । बीकानेर के वैष्णव परिवारों में शुचिता का बहुत ध्यान रखा जाता था । समृद्ध परिवार की गृहिणियाँ भी घर का कामकाज स्वयं करती थी ,हां सहायता में गुरियानियाँ (ब्राह्मणियाँ) सहयोग करती थी ।जिनके घर भी बाणियों से ही चलते थे । अब आइए बात करते हैं इस यंत्र की । यह यंत्र पापड़ के 'लोए/या पेड़ी'काटने का यंत्र है ।

इस यंत्र के 2 भाग है । नीचे के लकड़ी के चौखटे में बने खानों में पापड़ के बेलनाकार टुकड़े सजा दिये जाते थे । दूसरे ढक्कन नुमा चौखट में समानांतर दूरी में मजबूत तार लगे है । इस चौखटे को ढक्कन की तरह रख कर दबाया जाता था जिससे पापड़ के एकसार लोए कट जाते । अब कुशल गृहिणियाँ यह निश्चित करती थी कि पापड़ पूरे गोल और एक नाप के हों ।

घर की मुखिया सूरज की रोशनी में पापड़ देख कर चेक करती थी की पापड़ बिचखंदा यानी बीच से पतला और किनारे से मोटा ना हों । लड़कियों को सिखाते वक्त दादी माँ या बुवा दादी बेलन का भी प्रयोग कर लेती थी ।

विगत 20-25 वर्षों में घर मे पापड़ बनाने की परंपरा लुप्त होती जा रही है । यह यंत्र एक संग्रहालय की वस्तु बन गया है । एक जमाना था जब विवाहों में वृहद भोज कई दिन चलते थे । विवाह के लिए पापड़ बड़ी बनाना एक वृहद कार्य होता था । जब कई कई मण पापड़ बनते थे तब बीकानेर में रिश्तेदारों के घर पापड़ बेलने भेजे जाते थे । जब पापड़ के लोए भेजे जाते तो खाने के लिए भी भेजे जाते । 500 लोओं पर 50 लोए खाने के लिए भेजने का अलिखित नियम था । बड़ी सुंदर सामाजिक व्यवस्था थी ।

यह यंत्र हमारे संबंधी ने बीकानेर से लाकर अपने गोदाम में पैक रखा हुआ है ।

सभार- <https://www.facebook.com/sciencevedic/> से